ग़ज़ल

सत्यम भारती

रक्स करती शाख की वो तितलियाँ
प्रवक्ता, हिंदी साहित्य, राजकीय माडल इंटर कॉलेज,
नैथला हसनपुर, बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश
मोबाइल नंबर- 8677056002
प्रकाशित कृतियाँ- सुनो सदानीरा (ग़ज़ल-संग्रह),
बिखर रहे प्रतिमान (दोहा-संग्रह)

1

बिखर रहा विश्वास आजकल
आम-जनों की आस आजकल

गांवों के सपने सलीब पर
शहरों में उल्लास आजकल

बहू रोज डिस्को जाती है
वृद्धाश्रम में सास आजकल

जनता के हिस्से बस जुमले,
प्रतिनिधि का मधुमास आजकल

दिल्ली खून-पसीना पीती
नहीं बुझ रही प्यास आजकल

कविगण मिल कोरस गाते हैं
कविता है परिहास आजकल

देख मंच की हालत 'सत्यम'
गदहों में उल्लास आजकल

2

तोड़कर अब पाँव की हर बेड़ियाँ
चाँद को छूने लगी हैं बेटियाँ

ढूँढता फिरता है वो भी खामियाँ
कर रहा है रात दिन जो गलतियाँ

आजकल महफूज दिखती हैं कहाँ
चार दिन के बाद ही मांगे बहू
मालकिन हूँ दे दो घर की चाबियाँ

वक़्त से पहले सयानी हो गयीं
जाल में फँसती कहाँ हैं मछलियाँ

3

प्यार और तकरार तुम्हीं से
फिर-फिर है मनुहार तुम्हीं से

पतझड़ मन का दूर करे जो
गुलशन और बहार तुम्हीं से

तुम तक ही मेरी कविताएँ
ग़ज़लों का विस्तार तुम्हीं से

सारी दुनियाँ तुममें दिखती
मेरा है संसार तुम्हीं से

सपने, ख़ुशबू, बादल, जुगनू
सबका कारोबार तुम्हीं से

4

क़दम-क़दम दो चार आदमी
दिखते हैं लाचार आदमी

जो आता है छल कर जाता
किसे कहूँ मक्कार आदमी

नफ़रत-हिंसा में घिरकर अब
बन बैठा अख़बार आदमी
बिक जाते हैं दो कौड़ी में
बिकने को तैयार आदमी

हक़ से वंचित दिखता है
जिसका था हक़दार आदमी

5

मर-मरकर यों जीना क्या
रोज ज़हर यूँ पीना क्या

घायल हर दिन होना है,
चाक जिगर फिर सीना क्या

रोटी में ही उलझे हम
मक्का और मदीना क्या

सबके हिस्से दुखड़ा है
रानी, मोनू, रीना क्या

तुझसे बढ़कर जीवन में
कोई और नगीना क्या

कविता

पुष्पेश कुमार पुष्प

विनीता भवन, निकट- बैंक ऑफ इंडिया,
काजीचक, सवेरा सिनेमा चौक, बाढ़, बिहार
Email- ushpeshkumar530@gmail.com

जीवन की वीरानगी में

जीवन की वीरानगी में भटकता इंसान,
अपनी तृष्णा की खोज में,
जैसे भटकता हिरन कस्तूरी की खोज में।
जो अज्ञान के अंधकार में डूबे,
भोग-विलास के सागर में गोते लगाते,
वे सिखाते हैं ज्ञान और वैराग्य की बातें।
मन का अंधेरा कैसे मिटे ?
यहां हर ओर फैला धर्म-कर्म के,
आवारण में ढोंगियों-पाखंडियों का संसार।
आओ ज्ञान का दीप जलाये,
मन के अंधियारे कोने में,
जहां ज्ञान, कर्म और वैराग्य का हो वास ,
जिसमें हर जीव के प्रति हो दया और करुणा का भाव।
अपनी आशा-तृष्णा का मोह मिटाकर,
दया-धर्म के पथ पर चलकर,
छू लो महानता की बुलंदियों को।